हिन्दी साहित्य में "नाटक" की विकासयात्रा

फाल्गुनिबहन नटवरलाल पटेल
सरकारी आदर्श निवासी शाला (कन्या), खेडब्रह्मा

प्रवर्तमान समय में टेकनोलोजी का विकास पथ खूब आगे बढ़ गया है । मनुष्य अभी मोबाईल, टी.वी. पर विविध नाटक, कार्यक्रम देखते है । गांधीयुग या उसके आगे इतिहास देखे तो उस समय पर लोक 'नाटक' भजते रहते थे । पर ये नाटक लिखा किसने और उसका उद्भव कैसे कहाँ हुआ वो सोचना जरुरी है । कविपथ विद्वान इसकी उत्पत्ति यूनान के अनुकरण पर मानते है । भारतीय नाटको को अपनी मौलिकता है । हिन्दी में नाटक परंपरा का आरंभ भारतेन्दुजी के समय से शुरु हुआ था । उसके पहले पूर्व नाटक नाम की जो रचनाएँ मिलती है उसमें आधुनिक नाटक की विशेषताएँ नहीं मिलती ये पद्य में लिखे गए नाटकीय काव्य है । भारतेन्दुने विविध भाषा के नाटको का अनुवाद करके नाटक साहित्य का निर्माण किया । हिन्दी साहित्य में नाटक साहित्य को चार युग में बाँटा गया है । जैसे की भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग, प्रगितवादी युगा।

भारतेन्दु युग हिन्दी नाटक को सबसे पहला युग है जीसमें भारतेन्दु ने अनेक नाटक दीए । इनकी सफलता का कारण रंगमंच का ज्ञान और अनुभव था । इनके नाटकों के कथानक इतिहास, पुराण तथा सामसामयिक है । उन्होंने सामाजिक समस्याओं को समजाने का सही माध्यम नाटक को समजा । इन्होंने हास्य तथा व्यंग के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया । इनकी नाट्य कला तथा अंग्रेजी, बंगला तथा संस्कृत तीन भाषाओं के नाटको का प्रभाव है । उन्होंने अपना पहेला नाटक 'विद्या सुन्दर' 1868 में प्रकाशित किया । इसके अलावा प्रमुख नाटको में पाखण्ड विदाभष्नाम् वैदिकी हिंसा हिंसा न भवती, धनजंय विजय सत्य हरिश्चंन्द्र, प्रेम योगीनी, कर्पूमजारी, चन्द्रावली, भारत दूर्दशा आदि । इनमे कुछ नाटक अनुदित भी है । उनकी प्रेरणा से अन्य अनेक लेखक भी नाटक रचना की और प्रवृत्त हुए । श्री निवासदास ने संयोगिता स्वयंबर, प्रहलाद चरित्र, धर्मालापट्ट, महाराणा प्रताप, नारायण मिश्रने गोसकट, कलि कैतुक, हठी हमीर आदि नाटक लिखा । ये सभी नाटको में प्रायः सुधार कुरीतियों, देशप्रेम तथा हास्य व्यंग की प्रवृत्तियाँ उपलब्ध होती है ।

द्विवेदी युग में वस्तुतः नाटकों की प्राप्ति अवरुध्ध हो गयी । द्विवेदी जी सुधारावादी प्रकृति के व्यक्ति थे । इस काल में मनोरंजन के लिए साहित्य रचना न होकर केवल नाटकों की रचना हुई । जिसके अंदर पात्र सात्विकवृत्ति वाले महापुरुष थे । इस काल में रचे गए नाटक इस प्रकार है जगन्नाथ चतुर्वेदी का तुलसीदास, वियोगी हरी का प्रबुद्धयामुने, मिश्र बंधू का शिवाजी, ब्रदी भट्ट का कुरुवन दहन, चन्द्रगुप्त तथा दुर्गावती नाटक, माधव शुक्ल का महाभारत, आनंद प्रसाद खत्री का संसार स्वप्न, मैथलि शरण गुप्त का चंद्रहास आदि । मौलिक नाटको के अभाव में भी इस युग में अनेक नाटकों का अनुवादन हुआ है ।

भारतेन्दु, द्विवेदीयुग के बाद नाटक साहित्य में प्रसादयुग आया । जिसमे हिन्दी नाटक को प्रौढता प्रदान हुई । इसमें जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद

सबसे प्रख्यात साहित्यकार थे । उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद का योगदान सबसे ज्यादा रहा । नाटक में जयशंकर प्रसार का योगदान ज्यादा रहा । इनके हाथों से हिन्दी नाटक के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ । प्रसाद ने एक दर्जन से अधिक नाचकों की रचना किये जिनका विवरण इस प्रकार है । सज्जन, कल्याणी, परिणय, करुणालय, प्रस्थित, राज्यश्री, कामना, अजातशत्रु, स्कन्दगुपब्त, चन्द्रगुप्त, ब्रुवस्वामिनी आदि । चन्द्रगुप्त उनका सर्वश्रेष्ठ नाटक है । नाटक में गीत सृजन इनकी नाट्यकला की एक विशेषता है । प्रसाद युग में कई सारे नाटकों की रचना जिसमें मुख्य है माखनलाल चतुर्वेदी का कृष्णार्जुन, गोविंद वल्लभ पन्त के वरमाला, राजमुकुट, उग्र जी का महात्मा ईशा, मुंशी प्रेमचंद के कर्बला, संग्राम आदि ।

प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक मे ऐतिहासिक नाटक समस्यामूलक नाटक आदि का निर्माण हुआ । ऐतिहासिक नाट्यकारों में हरिकृष्ण प्रेम, वृंदावन लाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, जगदीश चंद्र, माथुर आदि उल्लेखनीय है । हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में प्रमुख है । रक्षाबंधन, शिवसाधना, प्रतिशोध, आहुति स्वप्न भंग, विषपान शपथ । वृन्दावनलाल शर्मा ने राखी की लाज, कश्मीर का काँटा, झाँसी की रानी, हंस मयूर, बीरबल आदि तथा जगदीशचंद्र माथुर ने कोर्णाक एवं शारदीय की रचना कर इस परम्परा का आगे बढाया ।

इक्सन और बर्नाड शो से प्रभावित होकर हिन्दी में भी अनेक समस्या मूलक नाटकों की रचना हुई है । जिसमें मुख्य इस प्रकार है । श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने झलक, कैद, उड़ान आदि । लक्ष्मी नारायण मिश्र ने राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य, सिंदूर की होली, आधीरात, गुडिया का घर, वत्सराज आदि ।

इनमें मिश्रजी का दृष्टिकोण बुध्धिवादी है । समस्याओं के साथ पात्रो की मन स्थिति का भी निरुपण कीया है । शेठ गोविन्ददासने अपने नाटकों की समस्याओं को तल दृष्टि से देखा है । चरित्र चित्रण तथआ रंग मंच की दृष्टि से इनके नाटक अच्छे है । अनके नाटकों में यथार्थता का दर्शन होता है । मोहन राकेश हिन्दी नाट्य साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा वाले है । उन्होंने 'अषाढ का एक दिन', 'लहरो के राजहंस' तथा 'आधे-अधूरे', ने महत्वपूर्ण योगदान निभाया है । रंगंच के हिसाब से अषाढ का एक दिन सर्वोत्तम नाटक है ।

उसके अलावा स्वतंत्रता के बाद हिन्दी नाटक ने पाश्चात्य प्रभाव से जो नये आयाम ग्रहण किए उनकी प्रथम अभिव्यक्ति धर्मवीर भारतीय के 'अन्धयुग' में प्रकट हुई है । निष्कर्ष के रुप में यह निकलता है कि हिन्दी नाटक ने अपनी निरर्थकता और कलाहीनता के घर को तोड़कर उल्लेखनीय सर्जनात्मकता प्राप्त करने की दिशा में कदम बढाया है । और अब नाटयालेखन केवल सतही सामाजिक उद्देश्य परकता के आसपास चक्कर नहीं काटता बल्कि गहरी या मूलभूत मानवीय अनुभूति या स्थितियों का सन्धान करता है ।

संदर्भसूचि

1. शर्मा, रामविलास (2002). परंपरा का मूल्यांकन, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन
2. चतुर्वेदी रामस्वरुप (2007). हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन
3. www.hindikunj.com
4. अजयसिंह, (2009) नाटक का इतिहास, जनमानस एक हिन्दी मंच
5. हिन्दी साहित्य कोश भाग-2 (नामवाची शब्दावली) पृ.409
6. https://m.bharatdiscovery.org
7. https://jivani.org
8. मिश्र, विश्वनाथ प्रसा (2006). हिन्दी साहित्य का अतीत, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन